

DPN 6432

Title : युधिष्ठिर जज्ञ YUDHISTHIRA JAGNA

Run. No. 7157

Cat. No. 13 इअन

Micro. No.

Subject महाभारत : महावाक्य भाग

Religion : Hindu / Bauddha

Mahabharat epic portion

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

संस्कृत मूल पाठ भाग नेपालभाषा भाग

Size in cms. 21.5 x 8.5

Folios 35

Lines (in a page) 7

Sanskrit Text with Nepali Translation.

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

इअन अल्सप

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / धर्मगुया विकसित हुने / leather bound cover

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते नमस्कृत्य, नमो वैव गोपतये ॥
देवी सात्वती चैव, गतो जय मुदीरयेत् ॥ ॥ जन्मेजय उवाच ॥

કાપોત્તે સમુત્પન્ને, તગે હાસીના પુરિ ગુફા પૃચ્છે જાજા, જન્મેજમે, મહાકાલિ : ॥ જા
જન્મેજમે ધાયામન, ડાનેક સુષીષ્વર પનિસ્કે, પ્રાર્થના વિનતિ માસ્ત્રં, ડેસે વિજ્યાત,
હે સુષીષ્વર ગુ, ય્વ હાસીનાપુ, ધાયાગુ, જાજે દેશ, કાપુ મુગ સનિકં (સારીકં)
ડત્પાને જુણ, ય્વ દેશા જાજા, ગુધીષ્ઠિલા ય, સંજી કસે વિજ્યામ માળ,
સુષીષ્વર ધવાય જાજા જન્મેજમે, રનાય યાત ॥ ૧ ॥

સમાપ્તિ અથવા / Colophon

શ્રીશ્રી મહાકાલે સારસુત્રાયાં સીંહેતામાં, કાવ્યમેધ જદા ધર્મ, ગુધીષ્ઠિ
સાચાડે, ગુધીષ્ઠિ જદા સમાપ્ત ૫ ॥

10

5

0

cmts.

5

10

15

20





ॐ ५३

१ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ नमो रुगवर्तवा सुदेवाय ॥ नाना यनेन
मस्तुत्य नवेवेवन नारु मं । दवी सुवस्वती ॥ देव नारायण सुदी
नर्थ ॥ ॥ **ऊ नम ऊ य उ वा च** ॥ द्वाप न च म मस्तु न न ग न रुक्मि ना
पूनी ॥ यु वृक्ष पृच्छता नाजा ऊ नम ऊ याम रुवलि ॥ नाजा ऊ नम ऊ य
धायाम न अनक ॥ षी श्व न प निस्तु प्रार्थना विनतियास्य रुम वि
श्रुत रुम षी श्व न यु न श्व रुक्मि ना पू न धायाम गुन नाथ दक्ष द्वाप
नयूग सनिक उत्पलिरु न ना श्व दक्षाय नाजा रुधिष्ठिन या स संपू

शुक्रसंविषयमालम्ब्य शीघ्रवधकावनाज्ञाजन्मजयन ॥ नाप
 यात ॥ १ ॥ कथं विमार्गं रूपं न धर्मजोतिर्युधिष्ठिरः ॥ एवं सर्वदिक्ता
 सूर्यः कथमश्वमदामून ॥ ॥ ॥ शीघ्रवधकावनाज्ञाजन्मजयन ॥ नाप
 विनमियादाच्छुनिमित्तिन धर्मवाञ्छां रूपं विष्णु रुधिष्ठिर
 गच्छिष्यन्तः धर्मशील धर्मशूरा व धर्मचिरु समस्तनसूर्य
 वडतिशयावविष्णुकम्प्यच्छिष्टं चूलपावसन धर्मवाञ्छावया
 ख आश्रयदयकसंविषयमान धकाव वेसं पायनमृषियार्क

नाज्ञाजन्मजयन ॥ नापयात ॥ २ ॥ वेसं पायन उवाच ॥ हृष्टनाज
 स्यवक्षामि कथयामिन संहाय ॥ १ ॥ ककार्यासदवष ॥ ॥ ॥ देव्यास
 वमनिशी नाज्ञाजन्मजयन ह्लाकाखडकाडा वेसं पायनमृषीश्वरन
 आश्रयदयकन रुमहावाजा चूनपावसनहन ॥ ॥ ॥ रुमहावाजा अवस्य
 नजिनकन ॥ ॥ ॥ देव्यास अविश्वर दवलाकया समस्तं ह्लाया रुमहा
 ॥ ३ ॥ ॥ वक्ष्यामि अषय ॥ १ ॥ वेद्यावेद्यशुभाशुनि ॥ १ ॥ विष्णुदवसमा
 यूक्ता न विचलु विनायका ॥ ४ ॥ तथा सन स्वती गंगा कवेववास्तुथामि

15
10
तं। गन्धर्वचगणः सर्वे वनस्पतिगणैः ॥ ब्रह्मादिमपिश्वन विष्णु
देव चन्द्र सूर्य विनायक सनखमी गंगा अनकलाकपनिमन
सकनभनं सरामनकं सकनसुं नावदमषीश्वनन मरुतूडया
नमस्कावभावाव थख आरूदयकन नावदमपिश्वनन थव
वसुदेवाडागया जिनकने रुमं विष्णु नधक आरूविन नाजा
जन्मजययात वेसं पायन मषीश्वनन ॥ ३॥ ॥ नावदउवाच ॥ द
वस्य लोकवानाम ब्रह्माविष्णुमरुश्वनाभयप्रिष्ठिनसमावाजानरु

5
तानरुविष्णुति ॥ दवंजा ब्रह्माविष्णुमरुश्वन श्वद नाजानजा रुधि
ष्ठिनडा जावगा मद्र उदं मरु आयुं मद्र दयाडावा दं मद्र रु
तरुविष्णुवरुमान समसुं सियाव विष्णुक थचिद द्वाजा रुधिष्ठि
न ॥ ४ ॥ ॥ सखवा दीजिताका धर्महाल प्रवरुं नवतस्य सखं स
मानास्ति धर्मपूजाय प्रिष्ठिन ॥ रु नंगचिद धावसा सखवक्र रु स
ख असखमज्ञाक कमकालिमरुडा धर्मात्मा धर्महाल धर्मध्वरा
व समसुं सखववन वाजारुधिष्ठिनडा जाल सुनं मद्र थथनथ

का धर्मपूजयुधिष्ठिरश्च ॥ १॥ ॥ सैखवादीजिताकाधधर्महा
 लप्रवरुणः । नस्यसहस्रसमानास्ति धर्मपूजयुधिष्ठिरः ॥ ॥ वल्लु
 वरुनिश्चैव चन्द्रवेवावनावलि । नवद्याखेस्यमानधत्तासमाह
 शायुगयुग ॥ रुनेगधिदधवसाः श्ववधवसाविष्णुयावसया
 स्वनथं रुजधवसा चन्द्रमायासिनं रुजथूलपवाकमधवसावे
 वावनथं वीवधवसावलीवाजाथं रुगरुगपतिं उक्ति वाजायुधि
 स्थिरयाधर्मसुवाहसदाह ॥ ८ ॥ ॥ नस्यसहस्रसमानास्ति रुनसहस्रं

नकीरुवर्तुः एवं श्रुत्वा नगावाथं धर्मापि दुर्षप्रविता ॥ वाजायुधि
 स्थिरयाधिदसहस्रं गमयामदः युधिस्थिरतिह्नाऽमिवमदः सुग्न
 सदेवलाकनं मधमशुलसमनस्यनं पातालसु नागलाकनं श्वगु
 लरुवनसं वाजायुधिस्थिरवधकाऽधर्ममहाखसिश्च ॥ ९ ॥ ॥
 केनरूपनपथ्यामिः ऊरुपूजयुधिस्थिरः विचिरुधर्मवाक्यः आ
 गतासामहीकूल ॥ गुणवर्पनः किञ्चानधकाऽधर्मनरावपाऽ
 विद्यातः पृथिवीसु सन्द्वरूपन वाजायुधिनया च विरुध्यनिमि

15
 10
 5
 0
 5
 10
 15
 20
 25
 30
 35
 40
 45
 50
 55
 60
 65
 70
 75
 80
 85
 90
 95
 100
 105
 110
 115
 120
 125
 130
 135
 140
 145
 150
 155
 160
 165
 170
 175
 180
 185
 190
 195
 200
 205
 210
 215
 220
 225
 230
 235
 240
 245
 250
 255
 260
 265
 270
 275
 280
 285
 290
 295
 300
 305
 310
 315
 320
 325
 330
 335
 340
 345
 350
 355
 360
 365
 370
 375
 380
 385
 390
 395
 400
 405
 410
 415
 420
 425
 430
 435
 440
 445
 450
 455
 460
 465
 470
 475
 480
 485
 490
 495
 500
 505
 510
 515
 520
 525
 530
 535
 540
 545
 550
 555
 560
 565
 570
 575
 580
 585
 590
 595
 600
 605
 610
 615
 620
 625
 630
 635
 640
 645
 650
 655
 660
 665
 670
 675
 680
 685
 690
 695
 700
 705
 710
 715
 720
 725
 730
 735
 740
 745
 750
 755
 760
 765
 770
 775
 780
 785
 790
 795
 800
 805
 810
 815
 820
 825
 830
 835
 840
 845
 850
 855
 860
 865
 870
 875
 880
 885
 890
 895
 900
 905
 910
 915
 920
 925
 930
 935
 940
 945
 950
 955
 960
 965
 970
 975
 980
 985
 990
 995
 1000
 1005
 1010
 1015
 1020
 1025
 1030
 1035
 1040
 1045
 1050
 1055
 1060
 1065
 1070
 1075
 1080
 1085
 1090
 1095
 1100
 1105
 1110
 1115
 1120
 1125
 1130
 1135
 1140
 1145
 1150
 1155
 1160
 1165
 1170
 1175
 1180
 1185
 1190
 1195
 1200
 1205
 1210
 1215
 1220
 1225
 1230
 1235
 1240
 1245
 1250
 1255
 1260
 1265
 1270
 1275
 1280
 1285
 1290
 1295
 1300
 1305
 1310
 1315
 1320
 1325
 1330
 1335
 1340
 1345
 1350
 1355
 1360
 1365
 1370
 1375
 1380
 1385
 1390
 1395
 1400
 1405
 1410
 1415
 1420
 1425
 1430
 1435
 1440
 1445
 1450
 1455
 1460
 1465
 1470
 1475
 1480
 1485
 1490
 1495
 1500
 1505
 1510
 1515
 1520
 1525
 1530
 1535
 1540
 1545
 1550
 1555
 1560
 1565
 1570
 1575
 1580
 1585
 1590
 1595
 1600
 1605
 1610
 1615
 1620
 1625
 1630
 1635
 1640
 1645
 1650
 1655
 1660
 1665
 1670
 1675
 1680
 1685
 1690
 1695
 1700
 1705
 1710
 1715
 1720
 1725
 1730
 1735
 1740
 1745
 1750
 1755
 1760
 1765
 1770
 1775
 1780
 1785
 1790
 1795
 1800
 1805
 1810
 1815
 1820
 1825
 1830
 1835
 1840
 1845
 1850
 1855
 1860
 1865
 1870
 1875
 1880
 1885
 1890
 1895
 1900
 1905
 1910
 1915
 1920
 1925
 1930
 1935
 1940
 1945
 1950
 1955
 1960
 1965
 1970
 1975
 1980
 1985
 1990
 1995
 2000
 2005
 2010
 2015
 2020
 2025
 2030
 2035
 2040
 2045
 2050
 2055
 2060
 2065
 2070
 2075
 2080
 2085
 2090
 2095
 2100
 2105
 2110
 2115
 2120
 2125
 2130
 2135
 2140
 2145
 2150
 2155
 2160
 2165
 2170
 2175
 2180
 2185
 2190
 2195
 2200
 2205
 2210
 2215
 2220
 2225
 2230
 2235
 2240
 2245
 2250
 2255
 2260
 2265
 2270
 2275
 2280
 2285
 2290
 2295
 2300
 2305
 2310
 2315
 2320
 2325
 2330
 2335
 2340
 2345
 2350
 2355
 2360
 2365
 2370
 2375
 2380
 2385
 2390
 2395
 2400
 2405
 2410
 2415
 2420
 2425
 2430
 2435
 2440
 2445
 2450
 2455
 2460
 2465
 2470
 2475
 2480
 2485
 2490
 2495
 2500
 2505
 2510
 2515
 2520
 2525
 2530
 2535
 2540
 2545
 2550
 2555
 2560
 2565
 2570
 2575
 2580
 2585
 2590
 2595
 2600
 2605
 2610
 2615
 2620
 2625
 2630
 2635
 2640
 2645
 2650
 2655
 2660
 2665
 2670
 2675
 2680
 2685
 2690
 2695
 2700
 2705
 2710
 2715
 2720
 2725
 2730
 2735
 2740
 2745
 2750
 2755
 2760
 2765
 2770
 2775
 2780
 2785
 2790
 2795
 2800
 2805
 2810
 2815
 2820
 2825
 2830
 2835
 2840
 2845
 2850
 2855
 2860
 2865
 2870
 2875
 2880
 2885
 2890
 2895
 2900
 2905
 2910
 2915
 2920
 2925
 2930
 2935
 2940
 2945
 2950
 2955
 2960
 2965
 2970
 2975
 2980
 2985
 2990
 2995
 3000
 3005
 3010
 3015
 3020
 3025
 3030
 3035
 3040
 3045
 3050
 3055
 3060
 3065
 3070
 3075
 3080
 3085
 3090
 3095
 3100
 3105
 3110
 3115
 3120
 3125
 3130
 3135
 3140
 3145
 3150
 3155
 3160
 3165
 3170
 3175
 3180
 3185
 3190
 3195
 3200
 3205
 3210
 3215
 3220
 3225
 3230
 3235
 3240
 3245
 3250
 3255
 3260
 3265
 3270
 3275
 3280
 3285
 3290
 3295
 3300
 3305
 3310
 3315
 3320
 3325
 3330
 3335
 3340
 3345
 3350
 3355
 3360
 3365
 3370
 3375
 3380
 3385
 3390
 3395
 3400
 3405
 3410
 3415
 3420
 3425
 3430
 3435
 3440
 3445
 3450
 3455
 3460
 3465
 3470
 3475
 3480
 3485
 3490
 3495
 3500
 3505
 3510
 3515
 3520
 3525
 3530
 3535
 3540
 3545
 3550
 3555
 3560
 3565
 3570
 3575
 3580
 3585
 3590
 3595
 3600
 3605
 3610
 3615
 3620
 3625
 3630
 3635
 3640
 3645
 3650
 3655
 3660
 3665
 3670
 3675
 3680
 3685
 3690
 3695
 3700
 3705
 3710
 3715
 3720
 3725
 3730
 3735
 3740
 3745
 3750
 3755
 3760
 3765
 3770
 3775
 3780
 3785
 3790
 3795
 3800
 3805
 3810
 3815
 3820
 3825
 3830
 3835
 3840
 3845
 3850
 3855
 3860
 3865
 3870
 3875
 3880
 3885
 3890
 3895
 3900
 3905
 3910
 3915
 3920
 3925
 3930
 3935
 3940
 3945
 3950
 3955
 3960
 3965
 3970
 3975
 3980
 3985
 3990
 3995
 4000
 4005
 4010
 4015
 4020
 4025
 4030
 4035
 4040
 4045
 4050
 4055
 4060
 4065
 4070
 4075
 4080
 4085
 4090
 4095
 4100
 4105
 4110
 4115
 4120
 4125
 4130
 4135
 4140
 4145
 4150
 4155
 4160
 4165
 4170
 4175
 4180
 4185
 4190
 4195
 4200
 4205
 4210
 4215
 4220
 4225
 4230
 4235
 4240
 4245
 4250
 4255
 4260
 4265
 4270
 4275
 4280
 4285
 4290
 4295
 4300
 4305
 4310
 4315
 4320
 4325
 4330
 4335
 4340
 4345
 4350
 4355
 4360
 4365
 4370
 4375
 4380
 4385
 4390
 4395
 4400
 4405
 4410
 4415
 4420
 4425
 4430
 4435
 4440
 4445
 4450
 4455
 4460
 4465
 4470
 4475
 4480
 4485
 4490
 4495
 4500
 4505
 4510
 4515
 4520
 4525
 4530
 4535
 4540
 4545
 4550
 4555
 4560
 4565
 4570
 4575
 4580
 4585
 4590
 4595
 4600
 4605
 4610
 4615
 4620
 4625
 4630
 4635
 4640
 4645
 4650
 4655
 4660
 4665
 4670
 4675
 4680
 4685
 4690
 4695
 4700
 4705
 4710
 4715
 4720
 4725
 4730
 4735
 4740
 4745
 4750
 4755
 4760
 4765
 4770
 4775
 4780
 4785
 4790
 4795
 4800
 4805
 4810
 4815
 4820
 4825
 4830
 4835
 4840
 4845
 4850
 4855
 4860
 4865
 4870
 4875
 4880
 4885
 4890
 4895
 4900
 4905
 4910
 4915
 4920
 4925
 4930
 4935
 4940
 4945
 4950
 4955
 4960
 4965
 4970
 4975
 4980
 4985
 4990
 4995
 5000
 5005
 5010
 5015
 5020
 5025
 5030
 5035
 5040
 5045
 5050
 5055
 5060
 5065
 5070
 5075
 5080
 5085
 5090
 5095
 5100
 5105
 5110
 5115
 5120
 5125
 5130
 5135
 5140
 5145
 5150
 5155
 5160
 5165
 5170
 5175
 5180
 5185
 5190
 5195
 5200
 5205
 5210
 5215
 5220
 5225
 5230
 5235
 5240
 5245
 5250
 5255
 5260
 5265
 5270
 5275
 5280
 5285
 5290
 5295
 5300
 5305
 5310
 5315
 5320
 5325
 5330
 5335
 5340
 5345
 5350
 5355
 5360
 5365
 5370
 5375
 5380
 5385
 5390
 5395
 5400
 5405
 5410
 5415
 5420
 5425
 5430
 5435
 5440
 5445
 5450
 5455
 5460
 5465
 5470
 5475
 5480
 5485
 5490
 5495
 5500
 5505
 5510
 5515
 5520
 5525
 5530
 5535
 5540
 5545
 5550
 5555
 5560
 5565
 5570
 5575
 5580
 5585
 5590
 5595
 5600
 5605
 5610
 5615
 5620
 5625
 5630
 5635
 5640
 5645
 5650
 5655
 5660
 5665
 5670
 5675
 5680
 5685
 5690
 5695
 5700
 5705
 5710
 5715
 5720
 5725
 5730
 5735
 5740
 5745
 5750
 5755
 5760
 5765
 5770
 5775
 5780
 5785
 5790
 5795
 5800
 5805
 5810
 5815
 5820
 5825
 5830
 5835
 5840
 5845
 5850
 5855
 5860
 5865
 5870
 5875
 5880
 5885
 5890
 5895
 5900
 5905
 5910
 5915
 5920
 5925
 5930
 5935
 5940
 5945
 5950
 5955
 5960
 5965
 5970
 5975
 5980
 5985
 5990
 5995
 6000
 6005
 6010
 6015
 6020
 6025
 6030
 6035
 6040
 6045
 6050
 6055
 6060
 6065
 6070
 6075
 6080
 6085
 6090
 6095
 6100
 6105
 6110
 6115
 6120
 6125
 6130
 6135
 6140
 6145
 6150
 6155
 6160
 6165
 6170
 6175
 6180
 6185
 6190
 6195
 6200
 6205
 6210
 6215
 6220
 6225
 6230
 6235
 6240
 6245
 6250
 6255
 6260
 6265
 6270
 6275
 6280
 6285
 6290
 6295
 6300
 6305
 6310
 6315
 6320
 6325
 6330
 6335
 6340
 6345
 6350
 6355
 6360
 6365
 6370
 6375
 6380
 6385
 6390
 6395
 6400
 6405
 6410
 6415
 6420
 6425
 6430
 6435
 6440
 6445
 6450
 6455
 6460
 6465
 6470
 6475
 6480
 6485
 6490
 6495
 6500
 6505
 6510
 6515
 6520
 6525
 6530
 6535
 6540
 6545
 6550
 6555
 6560
 6565
 6570
 6575
 6580
 6585
 6590
 6595
 6600
 6605
 6610
 6615
 6620
 6625
 6630
 6635
 6640
 6645
 6650
 6655
 6660
 6665
 6670
 6675
 6680
 6685
 6690
 6695
 6700
 6705
 6710
 6715
 6720
 6725
 6730
 6735
 6740
 6745
 6750
 6755
 6760
 6765
 6770
 6775
 6780
 6785
 6790
 6795
 6800
 6805
 6810
 6815
 6820
 6825
 6830
 6835
 6840
 6845
 6850
 6855
 6860
 6865
 6870
 6875
 6880
 6885
 6890
 6895
 6900
 6905
 6910
 6915
 6920
 6925
 6930
 6935
 6940
 6945
 6950
 6955
 6960
 6965
 6970

॥ दनं दक्षगधिदधानसा. निर्मलमदा रुडी सिद्धरुमि. थडा ॐ क
 रुडा गुलि ध्वयदू ॥ १३ ॥ ॥ तफका ३ न व ३ नां. अग्नि काटि समप्र
 रुं १ पुरुमासां समा धाति. सूर्य काटि समप्रहं ॥ दनं गधिदधानसा.
 जिमन पाल पाक कया. सवर्षु यासिनं. रुजलाक काटि सूर्य या रु
 जथं. कामवन धानसा. पुरुमासीया च नु माथं. अग्नि काटि यासिनं
 रुजलाक. थधिदध दक्ष. रुमि नाष्टन धाया गुल ॥ १४ ॥ ॥ वाज द्वा
 न स प्रा फ व. प्र ति हानं स पृच्छत. कस्य रुवने ॥ १५ ॥ ॥ दं वा क्य निम

ववीरु ॥ धर्म च लु लन रुडा ख व. ध्या व वनं. वाजा या रु स थ न.
 दक्ष गधिदध दक्ष. गनं. थधिदध स म ख द. ॥ गध पू न प या था स.
 थ व का डा ध र्म न आ ग्धा द न ॥ १६ ॥ ॥ पुरु ॥ ग क ल द क्ष स्यां. स च
 धा रु वि धा न द. वाज कार्य पू व रु न प्र ति हान प्र ह स्यां ॥ दनं ध
 र्म वा लु ल म दा पृ मि श न. विष्णु मा रु जा ग्धा था स थ. विष्णु या रु मि नि
 कं रु व वा. अ सा नि कं. रु डा ध द वा जा या था स नि कं रु व वा. व का डा. अ रु
 क न. ध र्म च लु व र्ख मि रु व ॥ १७ ॥ ॥ री म र्म ना वा च ॥ कृ ना वा ग च्छु ना

15
10
प्रता कृता वापि समागमं । जानने नैव न जानामि । यद्विष्टि वस्य मन्दिरं
॥ अधर्म वा अल वा उदा वसमी पस चाढ । हीमसे नं खडा अ । आरु
दय कन । रु प्र क च्छु गन न अया धकं ॥ १० ॥ ॥ हेला वस्य व विख्याता
धर्म पूरु स्य म शिलं । कस्मात्वं च न जानामि वा उदा वसमागता ॥
रुने यद्विष्टि वग थि द धा वसा । स्वर्ग स द व ला कने । मध्यम सुल सम
नूयने । पाता ल स ना ग ला कने । थि रु वन नं । त अ धन का अ रया म
थ थि द । यद्विष्टि व वा जा या थ म सु नान च्छु । थन वा या धा ल च्छु न रवा

5
लं श्वय म पं । आ ग्य म श्रु या पू । रुने च्छु न ग । थ वा त ता या । सु नान क
न धका अ । हीमसे न न धाल ॥ १० ॥ ॥ वा अ वा वा च ॥ रु वी षा द स्य
आ उ नानां । मध्य स द स्य द्वा द षा । दा ता वा दान षा द स्य । हेला व स
च वा च लं ॥ हीमसे न न । आ ग्य दय का ख द षा अ । अधर्म वा अल
न धाल । रु हीमसे न म दाना उ । पय द का वा य । क अ न रू खा दिन
आ उ न च्छि न ता य द या अ । मध्य यान द्वा अ षा द । किम नि आ उ न न ता
य द य । दा तान दान या द्वा षा द । शि रु वन नं ता य द अ ध कं धाल ॥ १२

॥ ॥ हीमसन उवाच ॥ अथाहीमसु सर्वांश्च वाक्मन्त्रस्य दिनदिन
 ॥ सुंजनकनकपाजनिशुद्धिस्त्रिभुवनस्य मन्दिरं ॥ धर्मचाञ्चलनक्ष
 काखण्डकाऽहीमसननक्षत्रचयवादानसमीपनिस्तुतान
 वियहाजनयाचकरुयात्तत्र वाक्मन्त्रपनिस्तुतानवियत्वा खेमइ
 र्जकसंख्यां मइधकं हीमसननक्षल ॥ २० ॥ ॥ वाञ्छान उवाच ॥
 मयि जावर्षतवाजाप्रतिवाद्यं वदाम्यहं ॥ इक्ष्वर्थ आगता दानं वा
 आवाप्रतिमच्छुक् ॥ धर्मचाञ्चलनक्षल दमरावाजं चूनपावना

क. नकाडा एतत्थं पागाकथं चाक. थगुलवन्धनन्वाय च्छुय. जि
 जोयासवावराचु कन. अथनथूका जिथनडाया जिवाञ्छान
 डाच्छुयन्वाका च्छुवाञ्छल इयं रुडा. धर्मचाञ्चलनक्षल ॥ २१ ॥ ॥
 हीमसनावाच ॥ वाक्मन्त्रद्विषावेष्म. शूडा (श्वेवच) इर्थकं ॥ एता
 निवर्तुहीनानि. कथं दर्शन किं रुवत् ॥ हीमसनन आरूढयकन
 रुवाञ्छल जातपताथका. वाक्मन्त्र. द्विषय. थकल. शूड. थपता
 श्रुतात. यरू आदिकर्मयाय. एमन्मसनजा (गहन. डाक्मवाक्म

15
10
सधाय, थपनिस्तुथका पूजादानविय आग्यरुन, च्छुअजाग्यअया,
खानजिन ध्वयवृना, गधिदइयावजिनमसियानिधकाडाधान ॥
२२॥ ॥ वाअवस्यमुखं दृष्ट्वा, सुधिर्ममिदिवाकवं, पदि संहा
यन, श्वेव, सर्वलास्त्रानमाचवंतु ॥ रुनंहीमसननधान, थधर्म
वाअलयाखाल श्वयामाउन, हीमसनया, धर्मचिरुउत्तरिइल,
रुनंथिथिउरुवाउरुवननत्वाकाडा, अरुउरुवाल ॥ धर्मवाअलन
काकाखदकाडा, हीमसनन, आरुविल, रुवाअल, रुनदुख

काया, जातकुगाइयमद, उलक, काख, गध, दवाजीवडादक,
वोवस, रुसि, प, शुपावजन, सुकसनं, रुगउति, उगुलिउनमाइ
वना, जलजंरु, थगिरुकासख, अर्नकदडा ॥ २३॥ ॥ वाअलावा
व ॥ मिकलं वामां सभकं, सुखदुखसमानरु, प, अन्दीयमक
लं, कथं वरुचुरुवंतु ॥ हीमसनन आरुदयककाखदका
डा, धर्मवाअलनधाल, थग, थइयाडा, संसावयावाहि, सुखद
दुख, मलमूउजानिकं, सकलसंउति, कागा, अन्दीयउति, जातप

राधा लक्ष्मण (थ) ॥ २४ ॥ ॥ श्रीमत्सुन उवाच ॥ उवर्ष पदगंधर्वा
 (ग) पायां कृगलसुथा । समाने स्य जीवतस्य, अष्टमान विव
 र्जितः ॥ धर्मवाञ्छालया खट्वकाऽ, श्रीमत्सुन न आह्ला विल, प
 शुजात सकल्यं उ (थं) पपान वडा, चालस, रुसि आदिन उ (थं)
 अ (थ) ने चालस रुसि, उर, सल, किति, थमिस सा राव, सनील उ
 (थ) मदन, थमिसमान अपमान मइ ॥ २५ ॥ ॥ वाञ्छाल उवा
 च ॥ निन्दकऽपि शुन (थे) व, कत घ्नय्य संगिनां । चत्वाला क

वाञ्छला जाति वाञ्छल पंचमं ॥ श्रीमभिनन आह्लादयकादका
 डा धर्म वाञ्छल नक्षल दमदावाक श्रीमभिन वाञ्छल धाय (ग)
 द्द दवयुन ॥ ह्यादिन अनकनिन्दायाक द्द सिपूवृष ॥ २४ ॥
 मिश्र जाक द्द वद्व हिदगुल वद्व द्द वल दिति मधु पपपूव
 थथिद वद्व सनक द्द भवयाड वद्व वनवपू द्द थपतायाक द्द
 जातं नपं द्द ता थद्व वाञ्छल धाय ॥ २५ ॥ ॥ डि सं द्द वद्व थ
 यस्य वद्व द्द स्यप वा द्द ख कि यादी नस्य थथि या सापि वाञ्छल

उच्यते ॥ दूनां गमध्वानसा वाक्कषायात् श्वपात्रसन्ध्यामया
कक्षवदमसडाक्ष क्रियाकर्ममसडाक्ष श्वध्ववाञ्जलधाय ॥
२१ ॥ ॥ दन्तुविविनाशका पादाप्रक्षालनं विना अदृष्टिद
वगमविन्द सापिवाञ्जल उच्यते ॥ दूनां गमध्वानसा श्वज
नयाययात् दन्तुविमया कक्ष उक्तिमसिकक्ष दवयार्कपूजा
मडाक्ष नार्थवासी मन्त्रदक्ष दविडखडा अदयामदक्ष श्वध्व
वाक्कषावाञ्जलधाय ॥ २० ॥ ॥ कपिलाक्षीलपानन वाक्कषा

गमननच वदाक्षवविवावस सापिवाञ्जल उच्यते ॥ दूनां गम
ध्वानसा सियसाया इडतादक्ष वाक्कषा अकिडा कर्मया क
क्ष वदया अक्षवविवा नया कक्ष श्वध्वयात् वाञ्जलधाय ॥ २२
॥ ॥ कुंक्षनाक्षं महंक्ष मृत्तलाक्षपूराजनं एवं गृह्णित्वा या
विप्र ४ सापिवाञ्जल उच्यते ॥ महादृष्टनकयात्तवादक्ष ॥ ६४
कनकया अवादक्षयार्क वसुकववनकाडाक्ष सिकया क्सरु
जनया कक्ष श्वध्ववाक्कषावाञ्जलधाय ॥ २० ॥ ॥ मधूमहिरु

15
10
तं भक्तं वनं अग्निप्रदापयत् ॥ एतद्वाक्कृपिवियागन सापिवाशु
लउच्यते ॥ कस्मिद्दृष्ट्वा कर्तुं लिङ्गाकम् ॥ ३१ ॥ ॥ मातुलं पितृवश्चैव वदुवदु
मिथाकम् ॥ रुमीसजातावसुं सुपवष ॥ ३२ ॥ ॥ मातुलं पितृवश्चैव वदुवदु
थद्वयातवा अलक्षय ॥ ३३ ॥ ॥ मातुलं पितृवश्चैव वदुवदु
थद्वर्तल ॥ सुप्रधानक्रियनपुं सापिवा अलउच्यते ॥ रुमीस
मध्वनसा मा मववदुवदु कनद्याथ वनमदता हावपाता ॥ ३४ ॥
विशम् ॥ थद्वया अलक्षय रुमीकायमावा मा मववदुवदु वनस

महासं मसं मथय कस यथ कृयकं तडाम् थद्वया अलक्ष
य ॥ ३५ ॥ ॥ गजदुक्तिकदानम् ॥ ठिकावमेथनस्य व ॥ एकाकीरु
कासिस्नानं सापिवा अलउच्यते ॥ लून अरानदयकं प्रतिमाद
यकाकिसि रुवसां दानकावम् ॥ अजाग्यम् ॥ सुथवाजीस संक्ष
ववस प्रसंगया कम् ॥ याकारननडाम् ॥ स्नानमया कम् ॥ थकिया
कम् ॥ थद्वया अलक्षय ॥ ३६ ॥ ॥ एतद्वाक्कृपिवियागन सापिवा अलउच्यते ॥ रुमीस
थकं ॥ विघ्नापिक्रियनयन सापिवा अलउच्यते ॥ रुमीस थद्वया

नयाडय, हितिस, अपिस, मीर्थस, दव प्रीतिनतया गुलवसुक, स
 नकीन, विघ्नयायीन, ष्यान्नकान्न, चालुलक्षाय ॥ ३४ ॥ ॥
 विवाहावयथानावीसुलक्षकलांगना, विनादाषापविद्या
 गीसापिवालुलउचर ॥ विवाहायाकाठाकायासुकलार, थवस
 मानस, दाषनमदवगावगीडा, थद्ववालुलक्षाय ॥ ३५ ॥ ॥
 एकपसदयाहार्या, मकगृहनपालथरु, एकलुक्तामकडुकं
 सापिवालुलउचर ॥ दुधपूवषया, नद्वकलार, उकिमैखन

मरुद्व, दुधकालताडा, दुधउहिनीन, संपूर्णयायीन, थद्ववा
 लुलक्षाय ॥ ३६ ॥ ॥ दूवधनिपवस्त्रनिअरिथ ४ गृहमागन
 ४ सापिडुकंवरुकरुवं, सापिवालुलउचर ॥ दूवधसनडाडाअ
 रिथ, वाद्वधश्वनसा, संन्यासिश्वनसा, आदवमयास, निडायायी
 डा, हिक्काशानेसविपीन, थद्ववालुलक्षाय ॥ ३७ ॥ ॥ साकम
 नदाताव, दारुनाप्रकिमैचुकं, निवासापिगताथन, सापिवालु
 लउचर ॥ आसाअनगशानिन, रुगिनिन, मरुपूवषपनिमन

धनया उपवसुशयंरु. मवताशयंरु. थगुलिकतिनदानयाय. आ
थरुतिन. एगुलि धनडागुलि. रुतिखिनंयायमाल. आसाखनं
वाधयायमाल. थथमयाकद्व. वाअलधाय॥ ३८॥ ॥ अरुम
नवममास. नावीरुकावगुर्विणी. अन्नरुत्याप्रुवावीव. सापिवा
अलउचरि॥ चानागुनायतसइद्व. मिसाप्रसंगयाकद्व. अन्न
मनकद्व. न्वाकद्व. थद्व. वाअलधाय॥ ३९॥ ॥ पद्वि धंकाक
वाअल. पगुवाअलगदरु. अटिनांकारवाअल. सर्ववाअल

निन्दक॥ पद्विसकाखवाअल. पगुसगारुवाअल. मनूथस
काधवाअल. सकलयासिनंवाअलधाय. थन्नकर्मतावता
व. मवयाकर्मयाकद्व. सकल्यनिन्दायाकद्व. थूकावाअलध
य. अवाअलश्याया. कलसऊनमइकाकाया. वाअलकर्मम
यादा. आरुविनानऊनमयादा. ऊक्यावाअलधकधयाडा.
॥ ४०॥ ॥ गद्वगद्वपतीराव. यविष्ठिवस्यमांप्रति. वाअ
लस्यसमायका. एगुलीकूननवाधिपं॥ थनंलिहीमसनन. दा

वपालयाद्वननक्षत्र, इति द्वाव पाव, यधिष्ठि वयाक धाव, वा अ
 लकुम्भ, द्वाव सद्व, नाप वात विष्णय मान धक, धाव इति धाव ॥
 ४१॥ ॥ हीमसनं दं श्रुत्वा, वा अला सख हापितं । आगता
 ववनं श्रुत्वा, वा अला सख हापितं ॥ हीमसनन, धनज्ञा याख
 सकतां खवधका अ, द्वाव पाल कुं यान, मडा यरुधकाव ॥ ४२॥ ॥
 मातंगी आगता स्वामी वा अदा धान दीयत । जानाति आत्मक लेष ॥
 श्रीकृन् नवाधिप ॥ थमडा अडा यधिष्ठि वयाक, हीमसनन,

नापयाक, इयधिष्ठि व, मिजी स कुं याद्व वाव सवाध, वा अलन,
 नाना सख धर्म खलाक, कुव पाव मन, नाप वाय वा, नाप वा दान जा
 दाधन मद्, गम दून आत्मा हान सिव, अदून नाप वा दान, कुता दा
 धनं मद् धक, हीमसनन, यधिष्ठि वयाक, नापयाक ॥ ४२॥ ॥
 हीमसनम हावा दू, किं कथं आ गतं त्वया ४१ त्वं किं कार्यं नाम कस्य
 तहा वाक्यं निवदयतु ॥ धति हीमसनन आग्धा दय कुं दानव, य
 धिष्ठि वन आग्धा दयका, इ हीमसनम हावा दू, कुं कार्यं नथन

वया आमाया खद्वधकं डडा ॥ ४३ ॥ ॥ नउवाच ॥ शृणु
ऊनयथा वरुं यादृहं कथयाम्यहं वा असु गता दारं यथा वा
यं निवदयतु ॥ अनेकं यं मया कृतं न मा गम्य महात्मन ॥ अति
थ आ गता दारं अतिविद्यानवाधिप ॥ ४४ ॥ श्रीममननय धिष्ठि
वया कं नापयात रुमहावाज वलान्क ख नापयाय रुम
विद्या रुन अनेक खवाद झाक थमन्य सख वादिया नन मस्का
न दान सवाद अहुत अतिविद्यावक थधिद द्वा वालं वाननम

स्कावयाय जाग्य शया आवाधकं श्रीममनन आरू दयका ॥ ४५ ॥
॥ यधिष्ठिवउवाच ॥ कृदिकृदि पून कृदि सख वाक्य कादल
वायू पूजिता ऊन धर्मस्य श्रीममनया ॥ किं दृष्टं किमनूयानां
सर्वं शास्त्र विधानद दारं किं चिवा अला किं नूपस्य वकादल ॥ ४६ ॥
॥ धर्म पूजिता वायू पूजित आमा मन्य कृधय आमा शास्त्र सन
नं कृ मस अनं कृ आमा दान सवाद वा अलया नूप गधिदधका
अ श्रीममनया क यधिष्ठिव महावाजानदन ॥ ४७ ॥ ॥ श्रीमम



नावाव॥ काककाफिलवर्णानां कवूपनक लावनं लम्बग्रावमूर्धक
वायव्यं वेवमधूनता॥ गथिदवर्णधानता कावथंदाक स्तनधान
सा काकिलयाथंरिद थानरुकिनमरिद क्कदमिखा गवपातता
रुडा श्वय रुकिनक क ववनकस्मिथंवाक॥४८॥ ॥युधिष्ठि
वडवाव॥ गकुगकुइनावावि वाधुला पापकर्मसा अइष्टिदा
नमकक कथंतस्य गृहगता॥ अमाडाडाइइनावा निथुका
मायामनवाधुल गथनमिदि मकुडावधकाडा युधिष्ठिन

15
10
आगम्य दत्त ॥ ४२ ॥ ॥ श्रीमत्सुन उवाच ॥ अतिथ आगता दानं कु
लेन स्य किं पृच्छति ॥ अथावमुक्तं तथानं ॥ अरु कर्म विधीयते ॥ अ
तिथ ॥ यत्नं कुडाडा दया कुलक्षाल विवालय यच्च यत्नमरुका
दानवियाडा ॥ अयमनेना ॥ आगम्य परिमानं ॥ ३० ॥ ॥ नदर्श
दर्शनं दृष्ट्वा ॥ अस्मानेव कदाचन ॥ मला अरु मला मानं ॥ सत्यं सत्यं
नवाधिप ॥ हनो ॥ अयमप्यनुषगने मखदा ॥ अयाधिदख ॥ हनमन
डा ॥ अयाखवा नं वावनमस्का नयाय ॥ आगम्य ॥ अडा ॥ हनमला वा अरुधि

5
॥ अतिथि न उवाच ॥ ॥ यद्विष्टि न उवाच ॥ ॥ यद्विष्टि न उवाच ॥ ॥
॥ कस्य त्वं आगता दानं ॥ कुलावा गृहमागत ॥ अथा त्वं ददय वाचं
तला कस्य निवदयते ॥ ॥ ह्रीमत्सुन ॥ अयानि मिहिन ॥ अथ नडाया
आमाया वखनसा ॥ हिन कडकाडा वायाधकं ॥ अयात्त ॥ ह्रीमत्सुन
न ॥ हिन कडका ॥ हवा अल ॥ अथ नवाका ॥ अतिना ॥ अयडायाधकं ॥
॥ ॥ वा अनावाच ॥ नागावन्धू ॥ अवनधूना ॥ नागावन्धू ॥ अचक्र
षा ॥ पितामाता गुनू ॥ अगुनू ॥ अचक्रपागुनू ॥ पासाधिधि ॥ अ

[illegible]

ॐ ॥ बालकयावलखाय, वंश्यायावलचञ्चलशय, पद्मिया
वल, आकाश, कायावल, लंख, धर्मयावलसख, रुपाधुनाजाया
कायदंढाधकं ॥ ५४ ॥ ॥ आसाधीनंमयादृक्, दुर्ध्वार्थीकृत्तरी
जनं, दुर्ध्वनदीयतेदानं, सरुलंपाधुनन्दन ॥ रुपाधुपूजदंढा,
जनं, सुसुदंढाअतया, पस्यानकाओ, अत्रिन्मननाननक, नत्र
धर्मधकं, दुर्ध्वनदाविद्ययाक, दानवियागुलिमरुल्यधाय ॥ ५५ ॥
॥ अपूर्वदीयतेदानं, अपूर्वदवपूजनं, अनोधपिधुसत्कानं, का

15
10
टिऊरु रुलंल रुतु ॥ अपूर्वमउक्षयाकदानविथ, पूजामयाकाद
वपूजायाय, कृतादमदयाडावाक्य, सितताम्, अग्निसंस्कारया
य, थकियाजन, काटिऊरुयाकागिपुष्पलाफ ॥ ७८ ॥ ॥ रापि
ताक्षं कवंवेव, कथितं वजनार्दन ॥ अथवा रुलदाकवं, (मष्टिकूल
नवाधिप ॥ श्रीमदादवन, विष्णुयाक, आग्नादयकन, अथवा ऊरु
याकाया रुललायला, अथवा संमुखन रुलवायवा, नायीत्वधकं ॥
७९ ॥ ॥ इवाध्वानिपवस्त्वनि, अतिथ गृहमागर्ग, कस्य हाग्यं प्र

5
यत्नेन, अतिथस्य च संगम ॥ कायिनन अतिथनडाया, मंवया क
सवाका, अतुरुतवाया डाडी, चनं कडावनास, रुतिवूनं उडा
वयाकाडा, कयमाल, थकित्वकडाडा, श्रीमसंनन, वाधालयावि
विकारन, यधिशिवकन ॥ ८० ॥ ॥ यधिशिव उवाच ॥ इत्य (श्रीव
गृहनासि, कस्मिन्कालेषु हाजनं, अतिथ आगतादाव, कथमैक
पपूरु ॥ (मष्टयाकस, अन्नमड, डाक्षयाकसमथाक, कायिन
इवसांवा निडा, आभावाधालयाककडाडाध्वन, यधिशिवनहा

15
 10
 कोखदुकाडाहीमभननचाउलयादुडानक्षत्र॥५१॥ ॥चाउ
 नावाच॥अन्नपानादिकाखेवस्सन्दमूलरुलानिचरुथाचसस
 विप्रायअतिथस्सर्गदायक॥अन्नआदिनमानवसुसहितनभ
 सावसाधुविवसुभवयागरुतिखर्नुवियानस्सर्गडानीडा॥५२॥
 अतिथदानतिष्ठकिआत्मागृहपूजाजनउदकवासापित्वाडु
 ल्यणमांसरुदक॥दानसभवडयावचानीडाहिदामविम
 थमननयाडावानीडाडालिअन्नणमांसरुदकयाकाडुल्य॥

5
 ५३॥ ॥अतिथविमखंजातिविमखंपिहदेवताकाटिपूजा
 विनध्यकिबुद्धरुखापदपद॥इवानसभवक्यावकमवाय
 काडाकमास्सर्गसत्रांपिहलाकपनिकाडाअयकाटिपूजाया
 कसांरुलमलाकपलाककलंत्वंबुद्धरुखावाक॥५४॥ ॥देवा
 चनंरुवक्षीनंसत्यदीनंदयाकथाविनाअतिथऊऊनपूष्यसर्व
 उनिस्तला॥चोवावापिवाउनावाधरुवापिहघागकंवासुदेव
 समाप्तातिअतिथस्सर्गसंकम॥५५॥रावमइदमयासत्यसत्य

मदय्यादया अतिथमदुकरु सांलमशुव पृथमद ॥ पृथु
सांलमशुवसां मांमववुरुनकुमशुवसां अतिथशुवनास नाना
यनउ उतिरुवप थद्वनस्वर्गकु यीउ ॥ ५३ ॥ ॥ नगववगुरु
वाथ नया ४ पृथुवलीकतं अपूर्वायस्य दृष्टव अतिथमवुरु
लंलुरु ॥ मनुहीनं दुर्गथन अर्द्धवेवकिलंविना मनुवकिचय
कन्या मरु रंमफमं कुल ॥ ५४ ॥ नगवसकुम अथवागीर्थम अ
पूर्वमन्यखनकाव तीर्थमस्मानयाका पृथलाक ॥ मनुहीनन

आकृतिवियान रामलमदयकपिथयान नउस्ववाशुउमिसा
पसंगयाकान क्रसुलकुलरुस्मशुयीवा ॥ ५५ ॥ ॥ नकुवावाथमा
ऊावा सुवीवास्वानशुकन अपृथम थपिषदस्य कनकपाठन
शुद्धाति ॥ नवववा रुकि माखिवा खिवावाशुवसां द्वाशुवसां
अश्वभट्टकुरुयाषादन लुथालसकयाव नकननास सकल्यं
शुद्धशुयीव ॥ थकिखठकावहीममनन यधिशिवकन यधिशि
ववाशुलयाहनविष्ठाक ॥ ५६ ॥ ॥ कथंउत्पयकधर्म कथंधर्म

प्रवर्तते। कथंचप्राश्नधर्म, कथंधर्मविनष्टमिति॥ इधिविद्वान्
 आह्लादयका, वाञ्छासुखादि, गन्धनधर्मदयीता, गन्धनधर्मस्ति
 नश्यीत्, धर्मकयगन्ध, धर्मरुल्लगन्धमविविधीत्॥ १०॥ ॥ अति
 थउवाच॥ सत्यउत्पद्यतेधर्म, दयाधर्मप्रवर्तते। दमायांथायक
 धर्म, काधधर्मविनष्टमिति॥ सत्यनधर्मदयीत्, दयानधर्मथान
 शयीत्, दमानधर्मकय, कसनधर्मरुयीत्॥ ११॥ ॥ यधिविद्वान्
 वाच॥ कावामिहप्रदक्षिच, कावामिहगृह्यच, कावामिहगृह्य

वेव, कावामिहककालक॥ पवदसयामिहसु, कृयामिहसु, नाग
 यामिहगन्ध, सिययामिहसु॥ १२॥ ॥ अतिथउवाच॥ विशामि
 हप्रदक्षिच, हायामिहगृह्यच, आहवमोषधमिह, धर्ममिहप
 वरुच॥ पवदक्षयामिहविद्या, कृयामिहसु, नागयामिहउपधि
 मवक्षयामिहधर्म॥ १३॥ ॥ यधिविद्वान्वाच॥ कथंचउत्पद्यकस्वस्ति,
 कथंचस्वस्तिप्रवर्तते। कनप्रवर्ततेस्वस्ति, कथंचस्वस्तिनिर्वदयक॥
 गन्धनकल्यानरुयू, गन्धकल्यानयकादयू, कनकल्यानचातीअ

लानयकादयोऽङ्गिद्विद्वि या कल्यानकंसकयिडा, वाङ्मनया रूपान, हकिद्वमनू चयातवाङ्मनया विषय

ग(थ)कल्यानधानीडा ॥ १४ ॥ ॥ अतिथ उवाच ॥ हवतिस्वस्तिविप्रस्य

वर्द्धनविप्रसवया। स्वस्तिप्रवर्द्धनतिसं दयंरुक्मि यतिनं ॥ वाङ्मनया विषय

वियान, कल्यानयमिडा, वाङ्मनया स्वानक ॥ १५ ॥ ॥ यधिविष्टव उवाच ॥

वन्दुपर्वलरूपस्थं, कथं पृथ्वीविस्तृता। कथं तीर्थप्रसंगेन, कथं पृ

थगृहस्थ ॥ वन्दुग्राममाकृष्ट, सूर्यग्राममाकृष्ट, ग(थ)

तिर्थया पृथ, कृयाधर्मग(थ)दयीडा ॥ १६ ॥ ॥ अतिथ उवाच ॥ व

न्दुपर्वलरूपस्थ, दधिवन्दुविस्तृता। कथं तीर्थप्रसंगेन, गृहस्थ

महप्रकं ॥ वन्दुग्राममादानयादालक्ष्य, सूर्यग्राममाकि

लक्ष्य, तीर्थसंकाटिदपृथ, कुसलक्ष्य, दपृथ ॥ १७ ॥ ॥

यधिविष्टव उवाच ॥ किंपृथग्रामनास्नान, गंगान्नानं वयल्लं, गया

पिण्डदानं च, गंगामया, अग्निमवच ॥ ग्रामनास्नानयादालक्ष्य

रुलं, गंगामस्नानयादालक्ष्य, गयापिण्डदानं च, रुल ॥

१८ ॥ ॥ अतिथ उवाच ॥ वानाक्ष्मं महापृथ, यदि आत्मावनि

र्मल, गयापिण्डदानं च, पिहसुर्गप्रयच्छति ॥ पृथ्वीविक्रियतश्च

गंगामतीसहस्रमादालक्ष्य, ३

आदय ॥ ३

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

कलुषं जनपुं मदाइखं। अन्नदानं न कलुषं, जनकर्म पुनः ४ पु
नः॥ दवरुकिरावमदयाडाइखीश्वर, अन्नदानमयादान, ग
रुवासुश्वर, पनसुीपनपुनष, पनधनकायान, अधावनवकडा
न, थदयाववन, वानाहाइख, दवमानयमयादान, धर्ममदया
न, नाममात, मदाइखीश्वर॥ ८४॥ ॥ यधिसिखडवाच॥ क
तिअंगुलमाकां, कतिगगतावका, कथंमघकुरुद्वाना, कति
दुरुवसुधना॥ आकाशगालअंगुलिदत, आकाशानदुरुशु

लिदत, मघनगुलिलंखधवदत, पृथीगालकूदत॥ ८५॥ ॥
चहुलांगुलमाकां, दयागगतालका, दक्षधववर्तमघा, सा
इयवसुधना॥ आकाशपअंगुलिदत, आकाशानगतिनेग
लदत, मघनवागवका, जिधवदत, पृथीखकूलादत॥ ८६॥ ॥
यधिसिखडवाच॥ माहुनायदिवाकन्या, पितायस्यकूमावक, व
हिवायं००दंशुला, कस्यददंममदुवं॥ गमयामाममदत, वव
वावख, गवयामाषीवनउस्यलिश्वर, जिकद॥ ८७॥ ॥ अतिथउ

वाच॥ तिलमध्वयथा तैलं काष्ठमध्वद्रुतासनं । इन्धमध्वचृतं चैव
 हानं चैव सजीविनां ॥ हामलसग (थ) च कनदत्त, सिसमि, ग (थ) चान
 इदं सधल ग (थ) वल, ध्वं हान इदं म्मातं ॥ ८० ॥ ॥ यूपिष्ठिव उवा
 च ॥ अग्नि कार्येषु वलायां, दवः अग्निथयारु वहु, अरुतापूष्कर्म
 य, अग्निमय गृहमम ॥ हामयाका वलस, ग (थ) दव पूजाया यज
 म्, अग्निपूजाया य, ऊर्ध्वग (थ) नका वडाते ॥ ८१ ॥ ॥ अग्निथ
 उवाच ॥ नवपूर्वमयं शका, कदावर्कषु हाजनं, वाऊगृह नरा क

यं, दाषाथा च विवर्जितं ॥ हृपां चूनक (ग) लनं मनया, भवया यं म
 नया, विषमनरा जाया चूत मनया, जिह्वा गिनिमख, मनयान द
 दनमद ॥ ८० ॥ ॥ यूपिष्ठिव उवाच ॥ कनदाषनरा कथ, विना द
 षविवर्जितं, सरुसुषी अष्टाष्टानां रुध्रं च गृहमम ॥ चूदाषन द
 याडा जिह्म मनया, विना दषसग (थ) मनया, चयया दान, अषिप
 निमन, नित्य जिह्म नव, चून जिह्म ग (थ) मनयध्वया ॥ ८१ ॥ ॥
 अग्निथ उवाच ॥ लारुषु मादिना माया, नवगिष्ठिहिता वना रुद्रा

15
 10
 कमादिहं माया सखं सखं न वाधिप ॥ लारुसमायानमादुयादं न
 न. लावसमचाद. मायानसुर्गम (अपाता लं. अरुनयात. रुमरु
 नाऊ. निश्चयनं. थखसखधकं ॥ २२ ॥ ॥ वाजाप्रतिग्रहं धानं. विष
 श्वादसमापमां. पूरुमां संवनरुका. नववाऊप्रतिग्रहं ॥ वाजाया
 प्रतिग्रहकायमहाअधान. यस्यासत्वावथं. थवकाययानानय
 हिं. प्रतिग्रहकायमहिद ॥ २३ ॥ ॥ नद्यायां ऊलसमूडं. पापपृष्ठं
 नृपशृङ्खलं. कस्यान्नं हाऊरुविप्रा. आश्चमर्तुगधुश्चरु ॥ दहास्वानस

5
 मानसु. दहावसु. समाधऊ ४. दहाधऊरुमावस्या. दहावधसमा
 नृप ॥ २४ ॥ ॥ वृत्तिधन. मूढावसकल्यं. हामूडसवनीव. थकाथं स
 मरुपापं मूढाव. वाजायाचुसवनीडा. थलियानिमिहिं न. जिनक
 नकमनया. अपिपनिमननया. अन्न. मरुनजी. शुचनकीडा. जीन
 मरुया ॥ जिह्मखिवाडा. मिताचुद्धडा. उति. जिह्ममिताव. चुद्धअ
 नाविमिजनडा. उति. जिह्मअनाविमिजनडा. दध्माचुद्धडा. उति. दध्मा
 जिह्मडा. वाजाचुद्धडा. उति ॥ २५ ॥ ॥ उतिष्ठपहुलं विद्यं. संकावाव

वनपत्नी गता न च गृहं सर्वं न च तिष्ठति वा द्मना गता सरसु
 विप्रस्था मध्यमाना यूधिष्ठिरं चिकामान गता वाजा कौधवाश्च नि
 वंदयन् ॥ १५ ॥ ॥ इयूधिष्ठिरं ददाता कुलपाल विष्णु कर्तुं संकाचा
 यममात्रं कुलपाल हि कपात कुलपाल या कुरु नित्यं नित्यं वा द्म
 स सरसु न कवसा दानं किं वा द्मर्षं डाल ॥ १६ ॥ ॥ यूधिष्ठिर उवाच
 ॥ ऊरु विध्वंसनं कृत्वा सर्वं विप्र गृहं गता ॥ अर्धं च पिबिषिषु च क
 र्थं मविप्र पूषन् ॥ ऊरु विध्वंसयात कवडा वदन् ॥ अथ सकल वा द्म

पक्षि मखत ददाता अर्धं स (मा द्म कय ॥ १७ ॥ ॥ मातं गक्रियत कर्म
 कथा ऊरु विधीयत विरुत आत्मनः स्वप्न ऊजमाना यूधिष्ठिर ॥ अ
 वा अल जातिन तम नख द्मा क द्म च ऊव वाडा उ किं स्व अ द्म ड ग थ
 याय सरु वप मजीडा धर्क विरु सरु वप ॥ १८ ॥ ॥ वा अवजा मि
 मा जाल सलापं स वरा पितं संसाध वे वरा वन न उल्ल दारु वं रु
 था पापिष्ठा आगता द्वाय प्रु रुखा क वातिय द्वा द (षा व र्ष सं पा
 फ सर्वं च निरुलं रु वन् ॥ अवा अल व र्ष रुया दान कर्म याय ला

कवग (थयाय संसान समद, थथिंझडाग (थयाय, पापिष्टदानस
 थाडाडा, पूरुंरुह्यायाकझ, जिम नद, दता ऊरुयादान, समरुं
 निरुल्लयागी कनधान ॥ १०१ ॥ ॥ अतिथ उवाच ॥ अरुंनेवनपापि
 ष्टा, अनगपापकर्मसा, रुवाकय पवित्रागी, सापापिष्टनवाधिप ॥
 ऊपापिमष, अनगकर्मयादाने, हाममयाकझनाजा, पापिष्टधाय
 ॥ १०२ ॥ ॥ उष्टावेष्टादृष्टंवाद्ये जथावाद्यं निवेदयन् ॥ सत्यं सत्यं म
 याउकं ममदाषानदीयन् ॥ अरुसुवधयावजनज्ञादा, ग (थनीति

६३

रुव अ (थ ०० नापयाळा, निश्चयनजिनवाळ (थज्ञाळा, जिदाषनम
 द ॥ १०३ ॥ ॥ आषाटीकार्हिकावेव, माघावेष्टापिकीरुथा, स्नान
 दानेनकरुं वं, सापापिष्टानवाधिप ॥ आषाठयापूरुंमासीकुरु, पू
 र्वाषाठनरु उवायीडा, कार्हिकपूरुंमासीकुरु, कार्हिकानरु उवा
 यीन, माघयापूरुंमासीकुरु मघनरु उलायीन, थरुपर्वलाक
 वलुस, स्नानदानमयाकझनाजा, थझपापिष्टधाय ॥ १०४ ॥ ॥
 यूधिष्ठिर उवाच ॥ त्वंच पूर्वमयादव, चिकुंरुचपुनः पुनः ॥ ममऊरु

15
 10
 5
 0 cmts. 5 10 15 20
 वथाकृत्वा सरुल त्वंददर्शनान् ॥ १०३ ॥ म ॥ मया पूजां च ध्यात्वा त्वंदव अति
 कृल पालु विवाले मया दा. कृन किं कुरु वार्थ यात. किं कुरु सरुल मया
 दाद दर्शन विद्यमान ॥ १०४ ॥ म ॥ मया पूजां च ध्यात्वा त्वंदव अति
 थं रुवंत. अद्य मम सरुलं कुरु पश्य मम त्वंददर्शनान् ॥ १०५ ॥ म ॥ मया पूजां च ध्यात्वा
 संकृल पाल. अतिथि श्रया व विद्या यमाल. थ नि किं कुरु सा रु ल्या
 श्रवणाय धूना. कृल पाल सेन कथं धर्मक. किं ददर्शन विद्यमान ॥
 १०६ ॥ ॥ धन्य दव मया प्रापं पश्य दव अदर्शन. तथा वा अल रूप

धर्म उवाच ॥ सख्यं सख्यं यून ४ सख्यं सर्वं सा सुविष्णु वद. अहं त्वं वयि ता पूज. सख्यं मय य धिष्ठि व ॥ १
 न. आगता सा गृह मम ॥ कृल पाल वा अल रूप श्रया व विद्या क. ध
 न्य किं धर्म ॥ १०७ ॥ ॥ त्वं किं ना नाय सन च व द्या विष्णु मरु श्व वं. क
 था वा अल रूप स. पिता म गृह मागता ॥ कृल पाल से. अल ला. व
 द्या ना. विष्णु ना. मरु श्व व ना. थ धिष्ठि वा अल रूप न विद्या क. अ व व
 श ना. सख्यं न आ ग्या दय क माल धर्मक. हा थ श्रु क ल पा ३. विन क्रिया
 न. थ किं धिष्ठि न या ख द दान. वा अल रूप धर्म स. स म स र्ध या
 व. अति रुष मान या दा ३. आ रू दय क व ॥ १०८ ॥ ॥ रु रु धिष्ठि
 सख्य २

न. कनववधर्मजथका. समस्त ६४ सुसणाववाठ. कृत्तिकायथ
यामस्तधकं ॥ १०२ ॥ ॥ त्वयाकीर्त्तिमयं धृत्वा. आगता हं गृहगतव
जस्योर्थं जरूपं धृत्वा. अहं दवयधिरिव ॥ कनकीर्त्तिप्रतापखटा
न. कनकयादानसज्जवया. ६४ धृत्वा जरूपयात. अहं दवयधिरिव
कं. धर्मन आगता दयकन ॥ ११० ॥ ॥ यधिरिव उवाच ॥ अद्य मम रुलं
धर्म. अद्य मम रुलं तप. अद्य मम रुलं नाश. पिता मं गृहमागता ॥
जं जन्म कायायाथ निशारुल्य शवा. जं जरूपयादाना रुलं थनिवाता ॥

अनाद्यसकलनाशः अववृक्षसविद्यादाता ॥ १११ ॥ ॥ मयजन्मरुवध
नः यंदवादर्शनाद्भवत् सर्वपापविनिर्मुक्तं यदि मांदवतायुव ॥
अव्यायाधन्यपदवियंथनिसमसूपापनेहालकला दवयायुव
कलपालः अविद्यायामाला ॥ ११२ ॥ ॥ पवधनपर्वदिंसा अस्य न
स्य प्रवर्तकः अलारुहकला रुक्ष एतानि मुक्ति लक्षणां ॥ धनकवध
दः सवतादुक्तं कवधपाप स्वप्न्यां गालमूढावधाननाशः लारु
मशवध्या लारुदयवधनमूक्तिमशवलक्षणां ॥ ११३ ॥ ॥

धर्म उवाच ॥ पत्रद्वयपत्रं हिंसा जस्य तस्य प्रवर्तकं अत्रा रुक्मिणी
 रं गंगानिमृकिलक्ष्मी ॥ भवया धनस भवया जीवस नारुन वदवपु
 क्षया धर्मिनमृकिलक्ष्मी ॥ ११४ ॥ ॥ साधुसाधुचिदंती वि सख्यं च
 वसुज रुचि स्मिन्नुक्तं कस्मिन् सख्य पूज्याश्च निनिद्वतां ॥ रुयधिरिष्टि
 कुन आयुदयमाल आयुद्विद्विषयथका कुनखशखलाक कुनज
 रुखद सख्यथालंखन रुयधिरिष्टि कुनतडाधदनाश्च जिनश्वयध
 ना ॥ ११५ ॥ ॥ आश्चर्यदवलाकषु धर्मवाक्यदयापत्रं दववाकन

ताधर्म पाण्डुपुत्र उवाच ॥ दवदवयालाकसं थधिददहामइ जि
 नमराकनूधनलाया रूपोदपुत्र थगिसमस्तं कुमिसनधनलपमा
 ल थगिविवालायादाडा धर्मसुधर्मसुविश्रुत ॥ ११६ ॥ ॥ थगिखश्रीमहा
 दवननावदमनिकन व्यासनसुगन्नादिन सकलमपि श्वनपनिकन वेसंपायन वाज
 जन्मजयकन थगुलिप्रकाशनायधिरिष्टिवाक धर्मसवायध्वल ॥ वेसंपायन उवा
 च ॥ धर्मपुरुषनराधिर धर्मपुरुषनराधिर धर्मपुरुषनराधिर जगधर्मतताजय ॥
 धर्मनवायदुतकीडा धर्मनमहिदग्रदुतकीवि धर्मनराकुमावकीडा गनधर्मदत
 अनजसइयुडा धकाव वेसंपायनमपिन वाजाजन्मजयकन ॥ ॥ थगिखश्रीमहा
 सकसाहसासंहितायां अथमधुन धर्मशुधिरिष्टिसंवाद यधिरिष्टिरुहसमाफ ॥